RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

# हरिशंकर परसाई के साहित्य में दलित सवाल

Sujeet Kumari

*M.A. Hindi (UGC- NET)*

हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य को साहित्य की एक विधा के तौर पर स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई ।उनका समग्र साहित्य व्यंग्य विधा के अंतर्गत समाहित हो गया,जिसमें उनकी कविताएं, कहानियां, उपन्यास, निबंध, व्यंग्य आदि सभी सम्मिलित है। परसाई ने व्यंग्य को हल्के-फुल्के मनोरंजन के क्षेत्र से बाहर निकालकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा ।लगातार खोखली होती तमाम व्यवस्थाओं में सेंध लगाकर उनके कमजोर पक्षों पर प्रहार करते हुए उन्हें उजागर भी किया ।इन व्यवस्थाओं के बीच पीसते मध्यवर्ग और निम्नवर्ग की समस्याओं को प्रमुखता से उभारा। हर क्षेत्र में मौजूद विसंगतियों, विडंबनाओं का बारीकी से विश्लेषण करते हुए पाखंडों और रूढ़िवादी विचारों पर करारा प्रहार किया। सामयिक समय का रचनात्मक उपयोग करते हुए वर्तामन से मुठभेड़ की और तात्कालिकता के संदर्भ में उन्हें जीवंत रूप में चित्रित किया। यह सब विवेक एवं ज्ञान-सम्मत दृष्टिकोण के बिना संभव नहीं हो सकता था। उनका समग्र साहित्य व्यंग्य के चरम उत्कर्ष का साहित्य है,क्योंकि उसमें फूहड़ता का लैस मात्र भी समावेश नहीं हो पाया है। समाज का शायद ही कोई उजला या अंधेरा पक्ष होगा,जिस पर परसाई जी की नजर न गई हो। टुकड़ो-टुकड़ों में बिखरे जीवन को उन्होंने अपने दर्शन के माध्यम से एक मुक्म्मल संसार के रूप चित्रित किया तथा इन सभी समस्याओं को उन्होंने अपने साहित्य में सेमट दिया ।जिसमें सामाजिक,राजनीतिक,धार्मिक,आर्थिक,सांस्कृतिक,प्रशासनिक,साहित्यिक आदि सभी क्षेत्रों को गहराई से विश्लेषित एवं मूल्यांकित किया गया है। एक सचेत नागरिक की भूमिका का निर्वाह परसाई जी बखूबी अपने साहित्य एवं लेखन के जरिए निभाई है।

आजादी से पूर्व की समस्याएं और आजादी के बाद की समस्याओं में आज भी कुछ समस्याएं अनसुलझी हुई है, जिनमें धर्म आधारित सांप्रदायिकता और जाति-आधारित भेदभाव मुख्य है। इन दोनों समस्याओं से भारत की जनता आजादी से पहले भी त्रस्त थी और आज भी है। इन समस्याओं से निपटने के लिए ही भारत में संविधान निर्माता दल ने इन समस्याओं को विशेष रूप से रेखांकित करते हुए इस वैमनस्य से निपटने के कुछ इंतजाम किए थे, जिनमें से एक आरक्षण था और दूसरा अल्पसंख्यक समुदाय को मिलने वाले अधिकार थे। भारतीय राजनीति में जैसे-जैसे राजनीति के केंद्र में धर्म और जाति को ज्यादा महत्त्व दिया जाने लगा, वैसे-वैसे भारतीय लोकतंत्र के सेकुलर ताने-बाने की हालत बिगड़ती चली गई और निरंतर बिगड़ ही रही है। आज जाति आधारित भेदभाव, घृणा,हिंसा आदि के मामलों में बढ़ावा इस बात का सूचक है कि हम जाति-भेदभाव को खत्म करने में नाकाम रहे है और धर्म आधारित हिंसा का बढ़ावा भी हमारे सेकुलर लोकतंत्र की पोल खोलता है।

दलित,पिछड़ा और अल्पसंख्यक तीनों के स्वरूप को विस्तारपूर्वक विश्लेषित करके ही इन समस्याओं को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है -

विकीपीडिया के अनुसार - "दलित हजारों वर्षों तक अस्पृ श्यर समझी जाने वाली उन तमाम जातियों के लिए सामूहिक रूप से प्रयुक्तप होता है जो हिंदू समाज व्यतवस्थास में सबसे निचले पायदान पर स्थित है। संवैधानिक भाषा में इन्हेंत ही अनुसूचित जाति कहा गया है। भारत की जनसंख्याक में लगभग 16 प्रतिशत आबादी दलितों की है।दलित शब्दै का शाब्दिक अर्थ है- दलन किया हुआ। इसके तहत वह हर व्य क्ति आ जाता है जिसका शोषण-उत्पीभडन हुआ है। रामचंद्र वर्मा ने अपने शब्दयकोश में दलित का अर्थ लिखा है , मसला हुआ, मर्दित, दबाया, रौंदा या कुचला हुआ, विनष्ट् किया हुआ। पिछले छह-सात दशकों में 'दलित' पद का अर्थ काफी बदल गया है। डॉ॰ भीमराव अंबेडकर के आंदोलन के बाद यह शब्दफ हिंदू समाज व्य वस्थाद में सबसे निचले पायदान पर स्थित हजारों वर्षों से अस्पृयश्यम समझी जाने वाली तमाम जातियों के लिए सामूहिक रूप से प्रयोग होता है। अब दलित पद अस्पृमश्या समझी जाने वाली जातियों की आंदोलनधर्मिता का परिचायक बन गया है। भारतीय संविधान में इन जातियों को अनुसूचित जाति नाम से अभिहित किया गया है। भारतीय समाज में वाल्मी ूकि या भंगी को सबसे नीची जाति समझा जाता रहा है और उसका पारंपरिक पेशा मानव मल की सफाई करना रहा है। आज भी गांव से शहरों तक में सफाई के कार्यो में इसी जाति के लोग सर्वाधिक हैं।"[i]

भारतीय समाज मे सवर्ण मानसिकता के कारण आज भी समाज की कुछ जातियों के प्रति भेदभाव और अत्याचार किया जाता है। मौजूदा दौर की चुनावी राजनीति में दलित बड़े वोट बैंक के रूप में हर पार्टी के लिए आकर्षण का केंद्र हैं । बावजूद उसके दलित एजेंडा राजनीति से ग़ायब क्यों है ? प्रोफ़ेसर विवेक कुमार कहते हैं , "इतने बड़े समुदाय को साथ लिए बिना आज राजनीति नहीं हो सकती है । इसीलिए भारतीय जनता पार्टी ने भारतीय रिपब्लिकन पार्टी के रामदास अठावले , एलजेपी के रामविलास पासवान और उदित राज जैसे दलित नेताओं को साथ लिया है, लेकिन अपना दलित एजेंडा घोषित किए बिना ।"[ii] यह एक कड़वी सच्चाई है कि दलित अत्याचार संबंधी कानून को कभी ठीक से लागू ही नहीं किया गया। दलित अत्याचार के मामले जल्दी निपटाने के

RRIJM 2015, All Rights Reserved

लिए न तो विशेष अदालतें बनाई गई है और न ही पुलिस अधिकारियों को दलितों-आदिवासियों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाने के लिए इस कानून के अहम प्रावधानों के बारे में ठीक से अवगत कराने का प्रयास हुआ है।

'दौड़ प्रधानमंत्री पद की ' में परसाई लिखते है कि - " किसी चमार ने पैसा पैदा कर लिया। उसने गाय-भैंस पाल ली। उसके घर घी होने लगा। वह मिट्टी के एक बर्तन में घी लेकर गाँव के पंडित जी के घर पहुंचता है। कहता है- पंडित जी, आपके लिए घी लाया हूं। घी देखकर पंडित जी ललचाते है। फिर आस-पास देखते है कि मुहल्ले में कोई देख तो नहीं रहा। आसपास लगो हैं। वे क्या कहेंगे कि मैं चमार का घी ले रहा हूं।

वे कहते है – वैसे तो हम चमार का घी लेते नहीं है। पर अब तू ले ही आया है तो बर्तन जमीन पर रख दे। हम तेरे हाथ से घी नहीं लेंगे।

चमार बर्तन जमीन पर रख देता है। पंडित जी उस पर पानी के छींटे डालते है और घर में ले जाते है। "[iii] इन सबसे पता चलता है कि समाज के बड़े हिस्से में जातिवादी जहर उसी तरह विद्यमान है, जिस तरह वर्षों पहले मौजूद था। हालात पहले की तुलना में बदले है, परंतु उतने नहीं जितने बदलने चाहिए थे। 'हरिजन,मंदिर,अग्निवेश'में परसाई ने समाज में होने वाले परिवर्तनों और विकास के संदर्भ में अपनी बात रखते हुए कहा है कि - " समाज का कसमसाना प्रगति का लक्षण है, परिवर्तन का लक्षण है। जो समाज कसमसाता नहीं वह जड़ रह जाता है। इस कसमसाहट के कारण इक्का-दुक्का घटनाएं होती हैं। ये प्रतीक हैं,व्यापक परिवर्तन और विकास की इच्छा की। ये घटनाएं अच्छी भी होती हैं और दुखदाई भी। "[iv] इसके माध्यम परसाई ने हरिजनों की समाज में स्थिति,संविधान,समाज और समानता के सवाल को उठाया है,तथा समाज में घटने वाली सच्चाई से रू-ब-रू कराते हुए गैर बराबरी वाले सोच पर सवाल उठाया है।समाज में ये जो जाति आधारित विभाजन है यह स्थानीय स्तर पर ज्यादा होता है,क्योंकि सब आपस में पहचान रहे होते हैं।जाति के सवाल के साथ जीने का अधिकार और मजदूर व किसानों के सवाल भी जुड़े हुए है। "मंदिर में प्रवेश का सवाल बाद में आता है। पहले जीने का अधिकार। संविधान में यह है पर बिहार में नहीं है। और जगह भी जहां माफिया गिरोह हैं,जीने का अधिकार नहीं है। ऐसी खबरों से न बिहार को कोई आघात लगता, नदेश को। संवेदना कुंठित हो गई है। ये नीचे वर्ण के लोग नीचे वर्ग के भी है। खेत मजदूर हैं, बंधुआ मजदूर है। ये जमींदारों के,झगड़ों के भी शिकार होते हैं। किसानों के नाम से जो संगठन बने हैं, उनके संघर्ष के भी शिकार होते हैं। हर घटना के बाद औपचारिकताएं होती हैं-मुख्यमंत्री वहां जाते हैं या किसी मंत्री को भेंजते हैं।पुलिस सक्रिय। एक बार फिर सरकार सुरक्षा का आस्वासन देती है और कहती है ऐसी घटना हो जाती है।विपक्ष इतना करता है कि सरकार से इस्तीफे की मांग करता है। कांग्रेस में विरोधी गुट भी यही चाहता है। आर्थिक कारण मिटाएं नहीं जाते। भूमि सुधार लागू नहीं किए जाते। न्यूनतम मजदूरी दिलाई नहीं जाती। सामंतवाद का खात्मा नहीं होता क्योंकि सामंतवाद के दम पर ही लोकतंत्र चल रहा है।"[v] वर्तमान समय में भी सामंतवाद का खात्मा पूरी तरह से नहीं हो पाया है,जिसकी वजह से जाति के सवाल के साथ-साथ पूंजीवादी दौर की समस्याएं भी विकराल रूप धारण करती जा रही हैं। जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक असमानता लगातार बढ़ती जा रही है।

धर्म परिवर्तन की राजनीति पर तंज कसते हुए परसाई लिखते है कि-

"साधो, मुसलमान को भी शुद्ध करके हिंदू बना लेते हैं। लेकिन मुसलमान हिंदू को बिना शुद्ध किए ही मुसलमान बना लेते हैं। फिर इस देश का मजा यह है कि हिंदू मुसलमान तो हो सकता है , पर ब्राह्मण कायस्थ नहीँ हो सकता। कोई ब्राह्मण कहे कि मैं जाति बदल कर कायस्थ होना चाहता हूँ तो उसे नहीँ होने देंगे। पर वह मुसलमान होना चाहे तो हो जाने देंगे। "[vi] ( जात बदल शादी)धर्म बदल जाता है, परंतु जाति नहीं बदलती यह भी अजब-गजब का टाइप खेल है समाज में। 'भीतर का घाव'में परसाई जी ने परिवार में उस स्त्री की स्थिति की चित्रण किया है,जो दहेज प्रथा की बली चढ़ा दी जाती है। अपनी भाभी की व्यथा को भीतर का घाव बताने में दो अर्थ ध्वनित होते है,एक व्यक्ति के भीतर की पीड़ा तथा दूसरी समाज के भीतर की व्याधि। " ऐसी स्नेहमयी,ऐसी सेवा करने वाली देवी से भी मेरे माता-पिता प्रसन्न नहीं थे।...नालायक समझे जाने वाले पति को, गरीब माँ बाप वाली पत्नी तिरस्कार ही तो पाती।मां बात-बात में गाली देती, पिता जी दिन में दो-चार बार उनके खानदान को नीच कहते। वह बेचारी पांच मील दूर रहने वाली अपने दुखी माता-पिता से मिलने भी नहीं दी जाती थी। "[vii] 'किताब का एक पन्ना 'में गरीब भिखारिन के जरिए गरीबी और समाज की निर्ममता को उजागर किया है- " दरवाजे से एक स्त्री घुसी।कंधे पर "[viii] 'तुलसी चंदन धिसे ', 'असामाजिक तत्त्व कौन ', 'शाहबानों का दूसरा झटका', 'रामस्वरूप ! रामस्वरूप !' आदि परसाई का व्यंग्य जीवन की समीक्षा था ।धनंजय वर्मा परसाई की व्यंपग्यन कहानियों के आक्रामक स्वसरूप पर टिप्पनणी करते हुए कहते हैंवो हमारे इतने रूबरू तीखी चोट करने वाली, तिलमिला देने वाली, अपनी आत्मीमय सीधी और सहज है कि सारी आलोचना उनके सामने निहत्थीव और असहाय खडी रह जाती है। अपनी इस बेचारगी के असहाय से भरकर ही शायद कुछ समकालीन आलोचकों ने पलट कर इन कहानियों पर वार किया था कि वे तो कहानियाँ ही नहीं हैं उन्हेंो हल्के पफुल्केि व्यंीग्यै लेखन के खाते,में डालकर विधाओं के अपने बने बनाए सांचों की पवित्रता और शुद्ध्ताक की रक्षा करते हुए चंद आलोचकों ने उन्हें रचनात्मुक साहित्यय से खारिज करना चाहा था। विधाओं की शुद्ध्ताह और पवित्रता की इन आलोचकों की मांग उतनी की रचना एवं कल विरोधी है, जितना कि जातीय शुद्ध्ता का नारा मानव विरोधी और संस्कृिति विरोधी है और इतिहास में हम दोनों का हश्र देख चुके है।"[ix] परसाई की कहानियाँ एक प्रतिवाद और प्रतिवाद की कहानियाँ हैं।----उनमें आदमी की चौतरफा आजादी के लिए क्रांतिकारी चेतना स्पंैदित है। समाज का क्रांतिकारी परिवर्तन,मनुष्यि की मुक्तिक्,एक बेहतर संसार की रचना-यही वो परिप्रेक्ष्यर है जिसमें ये कहानियाँ लिखी

गई हैं। उनके पीछे एक जीवन-दर्शन और मूल्य दृष्टि है ,एक विचार धारात्म क विवेक और विश्व दृष्टिय है।

'हरिजन को पीटने का यज्ञ 'में परसाई जाति के आधार पर किए जाने वाले अत्याचार का वर्णन करते हुए लिखते है "दो समाचार अखबारों में पिछले दिनों छपे। दोनों घटनाएं इन्दौर के आसपास की है ।दोनों घटनाएं महान है। दोनों हमारे गौरव को बढ़ाती है। इन्दौर के पास एक करोड़ की लागत से एक यज्ञ हुआ ।धन्य है ! उसी के आसपास एक हरिजन दूल्हा घोड़े पर सवार होकर निकला तो सवर्णों ने उसे और बारातियों को पीटा। यह भी धन्य है ! एक ही क्षेत्र में दो पवित्र कर्म हो गए। हरिजन को पीटना खुद एक यज्ञ है ।घुड़सवार दूल्हे को पीटना तो अश्वमेघ यज्ञ है। हरिजनों की बस्ती में आग लगाना राजसूय यज्ञ है। "[x] आज भी कई क्षेत्रों में कमोबेश यही हालत है। जहां पर दलित आज भी घोड़ी पर नहीं चढ़ने दिए जाते। अखबारों में इस तरह के समाचार लगातार आते रहते है। भारतीय लोकतंत्र में जातिगत भेदभाव निरंतर कम होने के बजाय विकराल रूप लेता जा रहा है। परसाई ने इसके आर्थिक पक्ष और पाखंड पर वार करते हुए लिखा है - "देश में जब करोड़ों आदमियों को अन्न खाने को नहीं मिलता,तब ये धार्मिक पाखंड़ी उसे आग में झोकेंगे। मेरे ख्याल से यह यज्ञ कराने वाले समय-समय पर परीक्षा करते रहते हैं कि देश का अविवेक और पौरुषहीनता अभी बरकरार है कि नहीं। लोग देखते रहे कि हमारा अन्न ,घी, शक्कर आग के हवाले किया जा रहा है और वे जय बोलते है। यानी लोग अभी अविवेकी और कायर है। इन लोगों से डरने से की कोई जरूरत नहीं है ।इन्हें लंबे समय तक शोषित रखा जा सकता है। "[xi] समाज का बड़ा तपका अल्प समूह द्वारा सदियों से शोषित और प्रताड़ित होता हुआ आ रहा है। शिक्षा और कानून ने इसको तोड़ने में एक निर्णायक भूमिका जरूर निभाई है, पर उसका सकारात्मक प्रभाव कम ही दिखता है ।परसाई हिंदू धर्म के यज्ञ और जातिगत भेदभाव को जोड़कर देखते हुए सवाल पूछते है -"क्या यज्ञ में और हरिजन दूल्हे के पिटने में कोई संबंध है ? क्या यज्ञ के प्रताप से ही हरिजन दूल्हा पिटा ? दोनों में संबंध है। यज्ञ करने और कराने वाले ऊंची जाति के लोग होते हैं। वैदिक युग में ब्राह्मण ने यज्ञ की तकनीक पर एकाधिकार कर लिया था। तकनीक का मामला है। तब क्षत्रियों तत्त्व-चिंतन से ब्राह्मणों को पीटा। मगर ब्राह्मण उस्ताद है। उसने फिर कर्म-कांड फैलाया और सारे समाज को जकड़ लिया। "[xii] प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से कर्मकांड़ों का जातिगत भेदभावों से संबंध बनता है। भारतीय राजनीति में आरक्षण की वजह से भले ही दलित समुदाय को उसका हक मिलना शुरू हो गया हो परंतु राजनीति और समाज से आज भी शुद्धतावादी विचार वाले लोग दलितों के साथ भेदभाव करते है। सामान्य जन की तो क्या कहिए दलित नेताओं के छू लिए जाने अपने को भ्रष्ट मानने वालों की कमी नहीं है। 'अपने-अपने भगीरथ ' में परसाई लिखते है "मूर्ति का अनावरण बाबू जगजीवन राम ने किया। उनका भविष्य उज्ज्वल है ।आगे वे किसी ब्राह्मण की मूर्ति का अनावरण करेंगे। मगर चमार ने कायस्थ की मूर्ति को छू लिया। कुछ लोगों को लगा कि इससे कायस्थ की पवित्रता भंग हो गयी, यानी कायस्थ री पवित्रता से चमार की अपवित्रता जोरदार है,तभी तो पवित्रता को अपवित्रता ने नष्ट कर दिया ।कुछ लोगों ने गंगाजल से मूर्ति को धो दिया ।वह पवित्र हो गई। अच्छा होता, जगजीवन राम को ही पहले गंगाजल से धोकर शुद्ध कर लेते। "[xiii] कहते राजनीति समाज का आईना होती है। जैसी राजनीति होगी वैसा समाज होगा या जैसा समाज होगा वैसी राजनीति होगी। मूल रूप में समाज और राजनीति का आपसी संबंध द्वंद्वात्मक संबंधों पर टिका है। हरिशंकर परसाई ने इसके माध्यम से समाज में फैले जातिगत भेदभाव के साथ-साथ हिंदू धर्म के पवित्रता वाले सिद्धांत की भी बखिया उधेड़ दी है। परसाई इस मामले में अन्य लेखकों से इसलिए अलग है, क्योंकि वो कठोर से कठोर सच को उतनी ही कठोरता से व्यक्त करते है ।शब्दों की चासनी में डुबोना कभी पसंद नहीं करते। इसलिए उनके व्यंग्यों की मारक क्षमता ज्यादा तीक्षण होती है।

हरिशंकर परसाई ने समाज और राजनीति दोनों जगह मौजूद जातिगत भेदभावों और प्रताड़ना के साथ-साथ हिंदू धर्म के कर्मकांड़ों को भी मुख्य रूप से उजागर करते हुए उनके आपसी संबंधों को अपने व्यंग्यों में केंद्रित किया है। परसाई ने दलित जीवन के आर्थिक,सामाजिक,राजनीतिक,धार्मिक एवं सांस्कृतिक आदि पहलुओं को अपने व्यंग्यों में उजागर किया। दलित-स्त्री को दलित होने की वजह से जो देह की प्रताड़ना सहनी पड़ती है, उसे भी उजागर किया है। धर्म परिवर्तन का सवाल, दूल्हे का घोड़ी पर बैठना या दलित नेता के मूर्ति छू लेने पर मूर्ति का अपवित्र हो जाना हो आदि तमाम प्रश्नों को बखूबी परसाई ने अभिव्यक्त किया है।

## संदर्भ सूची


[i] https://hi.wikipedia.org/s/12n

[ii] http://www.bbc.com/

[iii] हरिशंकर परसाई, दौड़ प्रधानमंत्री पद की, सं. मंडल-कमलाप्रसाद,धंनजय वर्मा,श्यामसुंदर मिश्र,मलय,श्याम कश्यप,राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,1-बी,नेता जी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली-110002, संस्करण-2012 पृ.40

[iv] हरिशंकर परसाई,आवारा भीड़ के खतरे, सं. मंडल-कमलाप्रसाद,धंनजय वर्मा,श्यामसुंदर मिश्र,मलय,श्याम कश्यप,राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,1-बी,नेता जी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली-110002, संस्करण-2012 पृ-20

[v] हरिशंकर परसाई,आवारा भीड़ के खतरे, सं. मंडल-कमलाप्रसाद,धंनजय वर्मा,श्यामसुंदर मिश्र,मलय,श्याम कश्यप,राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,1-बी,नेता जी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली-110002, संस्करण-2012 पृ-23

[vi] हरिशंकर परसाई,आवारा भीड़ के खतरे, सं. मंडल-कमलाप्रसाद,धंनजय वर्मा,श्यामसुंदर मिश्र,मलय,श्याम कश्यप,राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,1-बी,नेता जी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली-110002, संस्करण-2012 पृ-40

[vii] हरिशंकर परसाई,रचनावली भाग-2, सं. मंडल-कमलाप्रसाद,धंनजय वर्मा,श्यामसुंदर मिश्र,मलय,श्याम कश्यप,राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,1-बी,नेता जी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली-110002, संस्करण-2012 पृ-209

[viii] हरिशंकर परसाई,रचनावली भाग-2, सं. मंडल-कमलाप्रसाद,धंनजय वर्मा,श्यामसुंदर मिश्र,मलय,श्याम कश्यप,राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,1-बी,नेता जी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली-110002, संस्करण-2012 पृ-119

[ix] हरिशंकर परसाई रचनावली, भूमिका भाग-1, सं. मंडल-कमलाप्रसाद,धंनजय वर्मा,श्यामसुंदर मिश्र,मलय,श्याम कश्यप,राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,1-बी,नेता जी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली-110002, संस्करण-2012 पृ.सं.9

[x] हरिशंकर परसाई रचनावली, भाग-4, सं. मंडल-कमलाप्रसाद,धंनजय वर्मा,श्यामसुंदर मिश्र,मलय,श्याम कश्यप,राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,1-बी,नेता जी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली-110002, संस्करण-2012 पृ.192

[xi] हरिशंकर परसाई रचनावली, भाग-4, सं. मंडल-कमलाप्रसाद,धंनजय वर्मा,श्यामसुंदर मिश्र,मलय,श्याम कश्यप,राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,1-बी,नेता जी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली-110002, संस्करण-2012 पृ. 193

[xii] हरिशंकर परसाई रचनावली, भाग-4, सं. मंडल-कमलाप्रसाद,धंनजय वर्मा,श्यामसुंदर मिश्र,मलय,श्याम कश्यप,राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,1-बी,नेता जी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली-110002, संस्करण-2012 पृ. 194

[xiii] हरिशंकर परसाई रचनावली, भाग-4, सं. मंडल-कमलाप्रसाद,धंनजय वर्मा,श्यामसुंदर मिश्र,मलय,श्याम कश्यप,राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,1-बी,नेता जी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली-110002, संस्करण-2012 पृ. 35

RRIJM 2015, All Rights Reserved 